

## हरतालिका तीज की कथा

हरतालिका तीज की कथा देवी पार्वती और भगवान शिव के पवित्र प्रेम और समर्पण की कहानी है। यह कहानी बताती है कि किस प्रकार देवी पार्वती ने अपनी दृढ़ भक्ति और तपस्या से भगवान शिव को अपने पति के रूप में प्राप्त किया।

### देवी पार्वती और भगवान शिव की कथा

बहुत समय पहले हिमालय नामक राज्य में एक राजा रहते थे, जिनका नाम हिमवान था। हिमवान और उनकी पत्नी को देवी पार्वती के रूप में एक सुंदर और भक्तिपूर्ण पुत्री प्राप्त हुई। छोटी उम्र से ही पार्वती जी भगवान शिव की गहरी भक्त थीं। वह उनकी तपस्या, शक्ति और शांत स्वभाव की बहुत प्रशंसा करती थीं।

जब पार्वती जी बड़ी हुईं, तो उनके मन में भगवान शिव से विवाह करने की प्रबल इच्छा जाग्रत हुई। लेकिन उनके माता-पिता, विशेष रूप से राजा हिमवान, उनकी इस इच्छा से अनजान थे और उन्होंने पार्वती जी का विवाह भगवान विष्णु से करने का निर्णय लिया। भगवान विष्णु को पार्वती जी के लिए उपयुक्त वर माना गया था।

यह जानकर पार्वती जी बहुत व्यथित हो गईं। वह अपना जीवन केवल भगवान शिव के चरणों में समर्पित करना चाहती थीं और किसी और के साथ विवाह की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। पार्वती जी ने भगवान शिव को पाने के लिए कठिन तपस्या प्रारंभ कर दी और पूरी श्रद्धा के साथ उनकी आराधना करने लगीं।

पार्वती जी की इस दशा को देखकर उनकी एक सखी ने उनकी सहायता करने का निश्चय किया। उसने देखा कि अगर पार्वती जी का विवाह किसी और से हो जाता है तो उनका हृदय टूट जाएगा। इसलिए, भगवान विष्णु के साथ तय विवाह के दिन, वह सखी पार्वती जी को चुपके से घने जंगल में ले गईं।

उस जंगल की शांति में, सभी प्रकार के विकर्षणों से दूर, पार्वती जी ने अपनी तपस्या को और अधिक कठिन बना दिया। उन्होंने मिट्टी से शिवलिंग का निर्माण किया और उसकी दिन-रात पूजा करने लगीं। वह केवल वृक्षों से गिरे हुए पत्तों पर जीवित रहीं, और उनकी भक्ति दिन-ब-दिन गहरी होती गई।

पार्वती जी की अटूट भक्ति और कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर, भगवान शिव अंततः उनके सामने प्रकट हुए। भगवान शिव ने उनकी प्रेम और दृढ़ संकल्प से प्रभावित होकर उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। इस पर पार्वती जी ने विनम्रता से भगवान शिव के सामने अपना प्रणाम किया और उनसे विवाह की इच्छा व्यक्त की।

भगवान शिव, पार्वती जी के अटूट प्रेम और समर्पण से प्रभावित होकर, उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि वे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हैं। इस प्रकार, पार्वती जी का भगवान शिव के साथ विवाह संपन्न हुआ।

इसी बीच, हिमवान राजा और उनकी रानी अपनी बेटी के गायब होने से चिंतित थे। जब उन्हें पार्वती जी के बारे में पता चला, तो उन्होंने राहत की सांस ली और भगवान शिव द्वारा पार्वती जी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने की बात जानकर बहुत प्रसन्न हुए। इस विवाह को धूमधाम और समारोह के साथ संपन्न किया गया।